International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 166-172

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 166-172
www.allresearchjournal.com
Received: 21-05-2017
Accepted: 22-06-2017

डॉ० पंकज कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग, जे०वी० जैन डिग्री कालेज (मेरठ विश्वविद्यालय),
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

नरेन्द्र कुमार
पी०एच०डी० शोध छात्र,
भूगोल विभाग, डी०बी०एस० (पी०जी) कॉलेज, देहरादून,
उत्तराखण्ड, भारत

Correspondence
डॉ० पंकज कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग, जे०वी० जैन डिग्री कालेज (मेरठ विश्वविद्यालय),
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

उत्तर प्रदेश राज्य में नगरीय बालिकाओं की जनसंख्या में परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० पंकज कुमार एवं नरेन्द्र कुमार

सारांश
किसी भी देश अथवा क्षेत्र के विकास में महिलाओं की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, दूसरे शब्दों में महिलाएँ किसी भी देश की धुरी कही जा सकती हैं। आज हमारे दश में महिला और पुरूषों के अनुपात में क्षेत्रीय स्तर पर काफी भिन्नता पाई जाती है। यही स्थिति उत्तर प्रदेश राज्य की भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में 0–6 आयु वर्ग की बालिकाओं का नगरीय क्षेत्रों में वृद्धि अनुपात जानने का प्रयास किया गया है। 0–6 आयुवर्ग की बालक एवं बालिकाओं का अध्ययन ही भविष्य में स्त्री–पुरूष अनुपात में होने वाले परिवर्तन का आधार होता है, और भविष्य के लिंग अनुपात का चित्र प्रस्तुत करता है। प्रदेश में नगरीय बालिकाओं के अध्ययन में प्राय ऐसा देखने में आया है कि प्रदेश के सभी बड़े महानगरों में बालिकाओं की संख्या में निरन्तर कमी आ रही है, जबकि प्रदेश के नव सृजित जनपदों के छोटे नगर अथवा बड़े महानगरों के निकट स्थित नगरों में इनकी संख्या में अपेक्षाकृत कम गिरावट दर्ज की गई है। प्रदेश स्तर पर वर्ष 2001 में बालिकाओं की संख्या में जहाँ 15.66 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, 2011 में यह घटकर 12.25 प्रतिशत रह गई, इस दशक में प्रदेश स्तर पर बालिकाओं की संख्या में मात्र 36328 बालिकाओं (1.43 प्रतिशत) की ही वृद्धि हुई है, जो आने वाले कुछ वर्षों में स्त्री–पुरूश अनुपात में चल रहे असंतुलन को और अधिक बढ़ा देगा यह एक चिन्ता जनक स्थिति है। उत्तर–प्रदेश राज्य के नगरीय क्षेत्रों में बालिकाओं की इसी विषमता को जानने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है। जिसके लिए तत्कालीन 71 जनपदों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

कुट शब्दः बालिकाओं की संख्या (0–6 आयु वर्ग) में कमी अथवा वृद्धि भविष्य के स्त्री–पुरूष अनुपात का चित्र प्रस्तुत करती है।

प्रस्तावना
भारत का उत्तरी मध्य राज्य 'उत्तर प्रदेश' जिसका विस्तार 23°52′ उत्तरी अक्षांश से 30°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 77°36′ पूर्वी देशान्तर से 84°39′ पूर्वी देशान्तर के मध्य मिलता है। इस राज्य की सीमा उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड तथा बिहार सहित 9 राज्यों को स्पर्श करती है। इसकी उत्तरी सीमा नेपाल देश को स्पर्श करती है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी लम्बाई 650 किमी० तथा उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई 240 किमी० है। इस राज्य का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी० है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का चौथा सबसे बड़ा प्रदेश है। प्रशासकीय दृष्टि से यह राज्य 18 मण्डलों में विभाजित है, जिनमें 75 जिले, 915 नगर, 97941 आबाद ग्राम, 8833 गैर आबाद ग्राम है। वर्ष 2011 के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 19,98,12,341 व्यक्ति है, जो देश की कुल जनसंख्या का 16.51 प्रतिशत है। इस प्रकार यह देश का सबसे अधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। यहाँ का जनसंख्या घनत्व 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी० है। राज्य की कुल जनसंख्या का 77.7 प्रतिशत ग्रामीण तथा 22.3 नगरीय है। कुल जनसंख्या में महिला पुरूष अनुपात 912 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष है। जबकि बालक– बालिकाओं (0–6 आयु वर्ग) का अनुपात 902 बालिकाएँ प्रति एक हजार बालक है, जो कुल जनसंख्या का 15.4 प्रतिशत है। वर्ष 2011 की जनगणना तक राज्य में जनपदों की संख्या 71 थी बाद में 4 नवीन जनपद अमेठी, शामली, हापुड़ व संभल का निर्माण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन चूँकि 2011 की जनगणना को आधार मानकर किया गया है। अतः सम्पूर्ण अध्ययन को 2011 तक तत्कालीन 71 जनपदों के आधार पर ही किया गया है।

भूगार्भिक संरचना की दृष्टि से उत्तर प्रदेश चट्टानीय विविधता रखता है। यहाँ पर प्राचीन अर्कियन परिवर्तित चट्टानों से लेकर नवीनतम क्वाटरनरी कॉप तक मिलती है। इस भूतत्व एवं संरचना ने प्रदेश में मिट्टियों की बनावट पर प्रभाव डाला है। धरातलीय दशा के आधार पर इस प्रदेश को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं। शिवालिक पहाड़ियाँ प्रदेश, भाबर व तराई प्रदेश, गंगा का मैदान व दक्षिणी पठारी प्रदेश। गंगा इस प्रदेश की सबसे महत्वपूर्ण नदी है इसके अतिरिक्त यमुना, रामगंगा, शारदा, घाघरा, राप्ती, चम्बल, बेतवा, केन, सिंध व सोन आदि यहाँ की प्रमुख नदियाँ है। यहाँ की जलवायु मुख्य रूप से उष्ण प्रधान शीतोष्ण कटिबंधीय एवं मानसूनी है। जिस पर धरातलीय विभिन्नता का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्रदेश स्तर पर स्त्री एवं पुरूष के मध्य के अनुपात में निरन्तर आ रही विविधता को संज्ञान में रखते हुए प्रारम्भिक स्तर पर ही (0–6 आयु वर्ग) अध्ययन कर भविष्य में होने वाले परिवर्तनों का अवलोकन करना है।
2. 0–6 अयु वर्ग में ग्रामीण और नगरीय स्तर पर हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. 0–6 आयु वर्ग में नगरों में ही नगरों के आकार के आधार पर हो रहे परिवर्तन का अध्ययन करके उन कारणों की खोज करना जो उसके लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है एवं उसके संदर्भ में अपने सुझाव प्रस्तुत करना।

आंकड़ों का एकत्रीकरण एवं विधितन्त्रः प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश राज्य में नगरीय बालिकाओं की जनसंख्या में परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन में मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों का संकलन प्रमुख रूप से भारत के जनगणना विभाग (2001–2011), विभिन्न प्रकाशित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सांख्यिकीय पत्रिकाओं, शोध पत्रों इत्यादि से प्राप्त किया गया है। अध्ययन को रूचिकर एवं वैज्ञानिक आधार देने हेतु तालिकाओं अरेखों रेखा चित्रों तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न जनपदों में नगरीय बालिकाओं के विभिन्नता स्तर को ज्ञात करने के लिए आँकड़ों को छः स्तरीय (न्यूनतम, न्यून, मध्यम, उच्च मध्य, उच्च व अति उच्च) श्रेणियों में विभाजित कर अध्ययन को सरल और रूचिकर बनाने का प्रयास किया गया है।

वर्श 2001 में कुल जनसंख्या में 0–6 आयु वर्ग की जनसंख्या 14. 90 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 19.3 प्रतिशत हो गयी। इसी प्रकार वर्ष 2001 में नगरीय बालिकाओं की जनसंख्या 15.66 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2011 में घटकर 12.25 प्रतिशत रह गई। वर्ष 2001 में नगरीय बालिकाओं की संख्या 20,13,279 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 25,63,062 हो गई। यह 2001–2011 के दशक में 5,42,279 अर्थात 27.28 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। जनपद स्तर पर इनके वितरण व प्रतिशत में अनेक विभिन्नताएँ मिलती है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

नगरीय बालिकाओं में 0–6 आयु वर्ग की बालिकाओं का वितरण 2001 के अनुसार

वर्ष 2001 में नगरीय बालिकाओं का प्रतिशत 15.66 रहा। यह 1991–2001 के दशक में इनकी निम्न वृद्धि का परिचायक है। प्रदेश में सबसे कम प्रतिशत इलाहाबाद जनपद में 12.12 प्रतिशत व सबसे अधिक 19.80 मऊ जनपद में पाया गया। इस अनुपात

की दृष्टि से जिलों का वितरण कोई संचयी चित्र प्रस्तुत नहीं करता है। मध्य पूर्व के जनपदों में इनका अनुपात अपेक्षतया कम मिलता है। जिन जनपदों में महानगर है, उनमें इनका अनुपात कम मिलता है। यह वृहत महानगर वाले जनपद 24.39 प्रतिशत बालिकाओं के साथ 13.29 प्रतिशत औसत अनुपात रखते है। 16 जनपदों में इनका अनुपात 15.52 प्रतिशत है। यह जनपद राज्य के मध्य भाग में वितरित हैं। इनमें प्रमुखतः मध्यम आकार के नगर स्थित हैं। नगरीय बालिकाओं का 16.59 प्रतिशत अनुपात 22 जनपदों में देखने को मिलता है। इनकी स्थिति गंगा–यमुना दोआब के मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भागों में मिलती है। इनमें 25.79 प्रतिशत नगरीय बालिकाएँ पाई जाती है।

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि बालिकाओं में प्रतिशत के साथ उनकी संख्या में कमी आती जाती है। वर्ष 2001 में अति उच्च प्रतिशत 19.61 का औसत केवल चार जनपदों में मिलता है। यह प्रदेश की कुल 2.11 प्रतिशत बालिकाएँ रखते है। उच्च प्रतिशत रखने वाले आठ जनपदों में यह औसत 18.46 प्रतिशत है। इनकी उपस्थिति प्रदेश के पूर्वी भाग में प्रमुख रूप से मिलती है। यद्यपि यह केवल 8.08 बालिकाएँ रखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नगरीकरण ही नगरीय बालिकाओं के अनुपात में विभिन्नता के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। उच्च नगरीकृत जनपद मध्यम एवं निम्न नगरीकृत जनपदों की तुलना में कम बालिकाओं की संख्या रखते है। अर्थात नगरों के आकार का प्रभाव भी बालिकाओं की संख्या पर पड़ता है।

सारिणी 1: वर्श 2001 में नगरीय बालिकाओं का वितरण प्रतिशत

श्रेणी	बालिका प्रतिशत	कुल जनपद	बालिकाओं की संख्या	औसत अनुपात	प्रतिशत
न्यूनतम	ढ 15	9	616343	13.29	24.39
न्यून	15.16	16	613989	15.52	24.30
मध्यम	16.17	22	651676	16.59	25.79
उच्च–मध्यम	17.18	11	387406	17.34	15.33
उच्च	18.19	8	204170	18.46	8.08
अति उच्च	19 झ	4	53240	19.61	2.11
योग		70	2526824	15.66	100.00

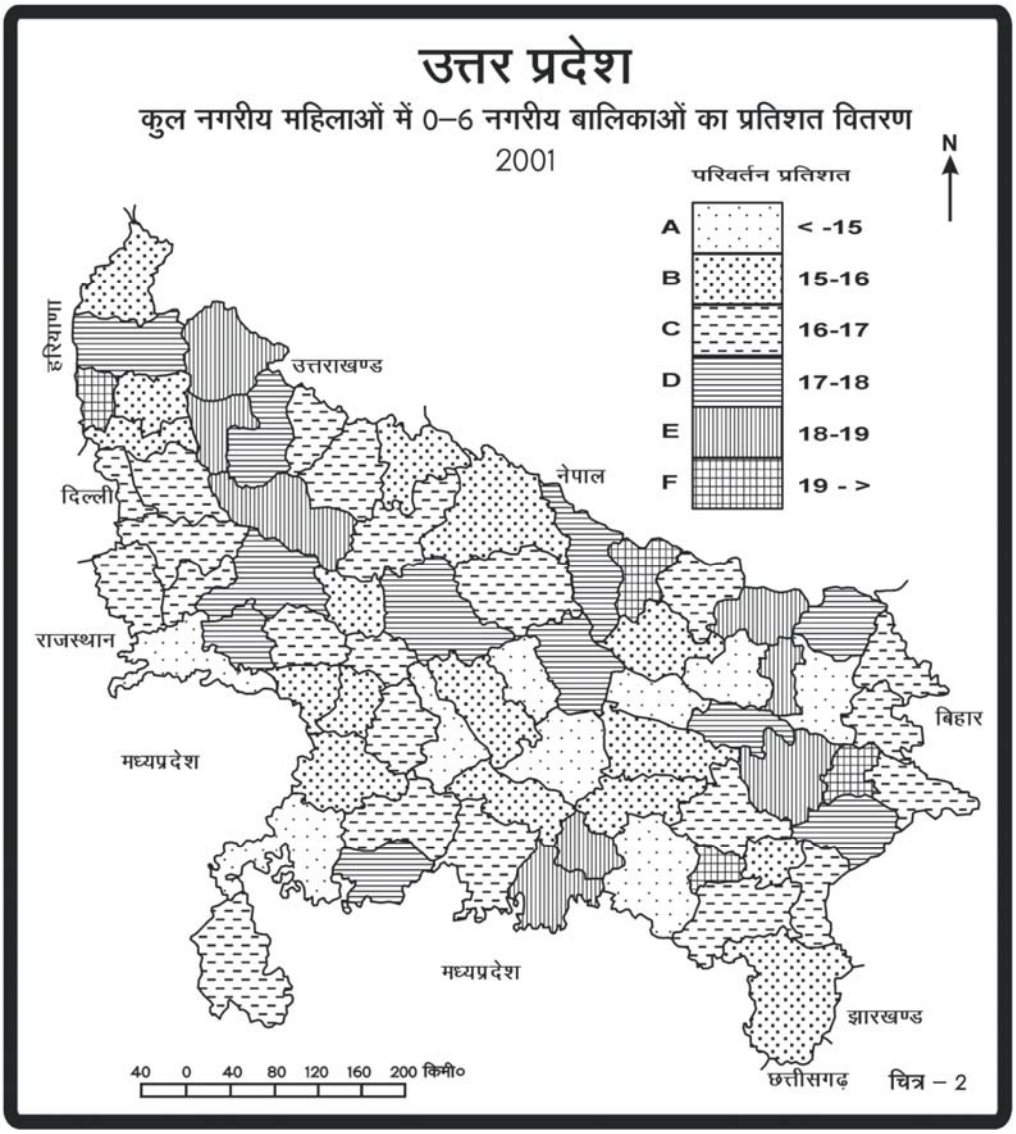

नगरीय बालिकाओं में 0–6 आयु वर्ग की बालिकाओं का वितरण 2011 के अनुसार

वर्श 2001 में तुलना में 2011 में 0–6 आयु वर्ग की बालिकाओं का अनुपात घट कर 12.25 प्रतिशत रह गया है। 2001 से 2011 के दशक में इनकी संख्या 36,238 बालिकाओं की वृद्धि हुई है, जबकि नगरीय महिलाओं में 47,87,012 की वृद्धि हुई। इस प्रकार नगरीय महिलाओं की वृद्धि 29.67 प्रतिशत है, जबकि बालिकाओं में यह वृद्धि 1.43 प्रतिशत ही है। राज्य के 71 जनपदों में से 41

जनपदों में बालिकाओं के अनुपात में जनपद स्तर पर भारी विभिन्नताएँ पाई जाती है। वृहद आकार की नगरीय बस्तियाँ रखने वाले जनपदों में लखनऊ (12.77), कानपुर (12.58), इलाहाबाद (12.12), गोरखपुर (9.87) में इनका अनुपात अत्यन्त निम्न है। इसके अतिरिक्त अधिकांश नवसृजित जनपदों में यह अनुपात 14 प्रतिशत से अधिक है। इनमें जे०पी० नगर (14.35), बागपत (14.14) कौशाम्बी (14.24), सिद्धार्थ नगर (14.78), संत कबीरनगर (14.03), संत रविदास नगर (14.46), काशीराम नगर (14.38), मऊ (14.79), नवसृजित लघु आकार के जिले हैं। इनमें नगरों का आकार भी लघु या मध्यम मिलता है। इसमें शामिल बदायूँ पिछड़े क्षेत्र में स्थित है और यहाँ अनुपात 14.80 प्रतिशत है। वर्ष 2011 में 71 में से 24 जनपदों में इनका अनुपात राज्य के औसत से कम मिलता है। 12 प्रतिशत से कम अनुपात वाले जनपदों में प्रदेश की 32.39 प्रतिशत बालिकाएँ रहती है। स्पश्ट है कि यह आकार की दृश्टि से तो बड़े हैं, लेकिन नगरीय बालिकाओं के अनुपात की दृश्टि से काफी पीछे है। ऐसे जनपदों का जमाव प्रदेश के मध्यवर्ती भाग में मिलता है। यहाँ यह एक पेटी के रूप में झांसी से इलाहाबाद व उत्तर में लखनऊ से गोरखपुर के बीच जमाव रखते है। प्रदेश का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की तुलना में उच्च अनुपात रखता है। गंगा यमुना दोआब के ऊपरी भाग में इनका अनुपात 13 से 14 प्रतिशत के मध्य मिलता है। इनमें गाजियाबाद (13.06), गौतमबुद्धनगर (13.89), अलीगढ़ (13.36), मथुरा (13.06), हाथरस (13.70) प्रमुख है।

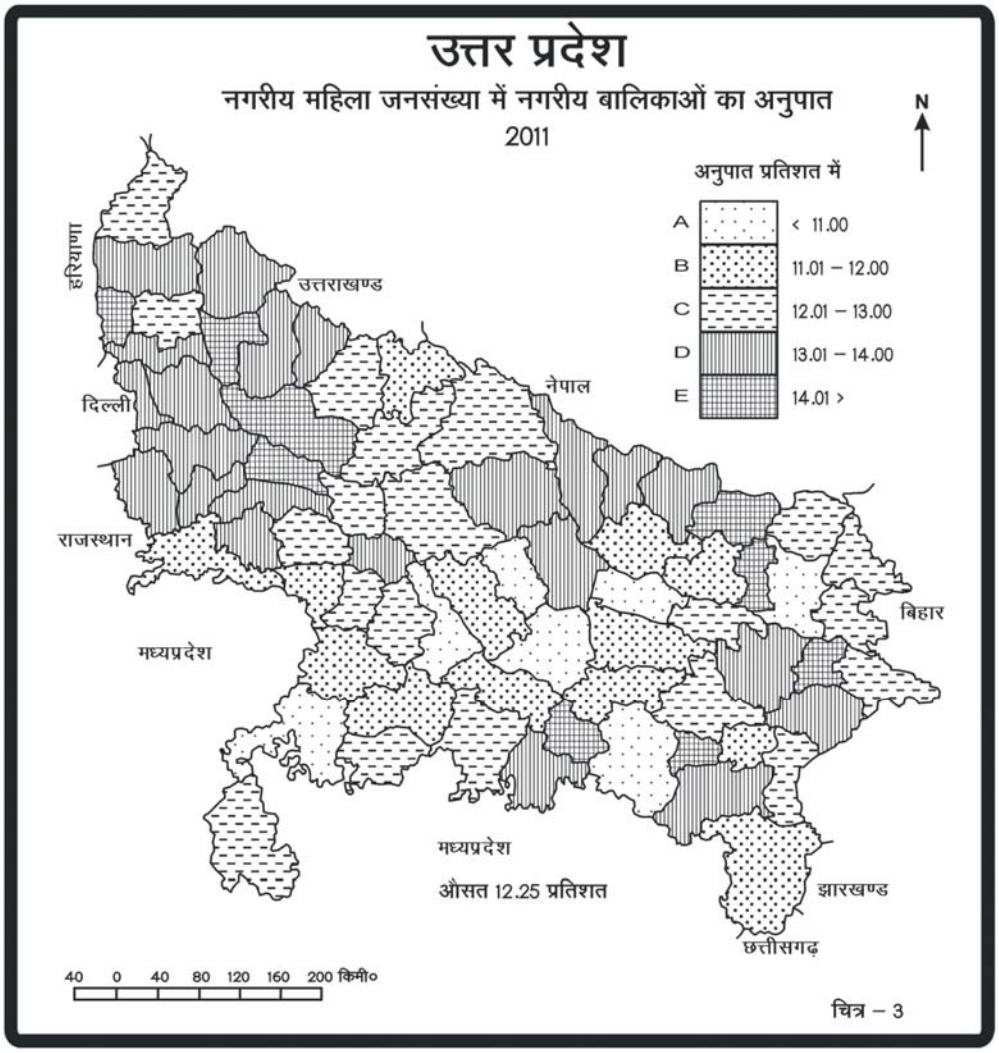

सारिणी 2: वर्श 2011 में नगरीय बालिकाओं का वितरण प्रतिशत

श्रेणी	बालिका प्रतिशत	कुल जनपद	बालिकाओं की संख्या	औसत अनुपात	प्रतिशत
न्यून	ढ 11.00	7	457678	9.94	17.86
मध्यम	11.01. 12.00	13	372464	11.70	14.53
उच्च–मध यम	12.01. 13.00	21	5661557	12.07	21.91
उच्च	13.01. 14.00	21	976941	13.68	38.12
अति उच्च	14.01 झ	9	194422	14.53	7.58
योग		71	2563062	12.25	100.00

उपरोक्त सारिणी से स्पश्ट है कि उच्च अनुपात (13–14) रखने वाले 21 जनपदों में सबसे अधिक नगरीय बालिकाएँ 38.12 प्रतिशत रखती है। यह सभी जनपद नगरीय व औद्योगिक दृष्टि से विकसित है। इसके साथ ही इनका विस्तार वृहद आकार के निगरीय जनपदों के समीप मिलता है। उच्च–मध्यम अनुपात (12–13) की दृष्टि से जनपदों में प्रदेश की 21.91 प्रतिशत नगरीय बालिकाएँ सम्मिलित है। इनका जमाव प्रदेश की पूर्वी व दक्षिणी सीमा पर तथा रूहेलखण्ड मैदान में मिलता है।

2001 से 2011 में नगरीय बालिकाओं की संख्या में परिवर्तनः एक और जहाँ वर्ष 2001 से 2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं की संख्या में अल्प वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर इनके प्रतिशत में 3.

41 प्रतिशत की कमी देखने में आई है। प्रतिशत की दृष्टि से तो सभी 71 जनपदों में कमी अंकित की है, परन्तु संख्या की दृष्टि से 44 जनपदों ने इनकी संख्या में कमी अंकित की है। शेश 27 जनपदों में प्रतिशत घटने पर भी उनकी संख्या में वृद्धि हुई है, चाहे यह वृद्धि कहीं–कहीं अति अल्प है। इन जनपदों में बालिकाओं की संख्या में 12.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके विपरीत 44 जनपदों ने इनकी संख्या में 8.32 प्रतिशत की कमी अंकित की है, जैसा कि निम्न सारिणी से स्पश्ट है।

सारिणी 3: नगरीय बालिकाओं की संख्या में जनपद स्तर पर परिवर्तन (2001–2011)

कमी / वृद्धि	जनपद की संख्या	2001 में बालिकाएँ	2011 में बालिकाएँ	वृद्धि (अन्तर)	अन्तर प्रतिशत में	प्रति जनपद वृद्धि
वृद्धि वाले जनपद	27	1123331	1276374	+1530443	+13.62	+5668
कमी वाले जनपद	44	1403493	1286688	−116805	−8.32	−2654
योग	**71**	**2526824**	**2563062**	**+36238**	**+1.43**	**+510**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक वृद्धि गाजियाबाद जनपद में 60182 बालिकाओं (45.62 प्रतिशत) की मिलती है, जो कुल का 39.75 प्रतिशत है। अन्य प्रमुख जनपदों में गौतम बुद्धनगर (28564 = 87.03 प्रतिशत), अलीगढ़, मथुरा, आगरा, कानपुर देहात, इलाहाबाद, अम्बेडकर नगर, सिद्धार्थनगर, चंदौली है। गंगा–यमुना दोआब का ऊपरी भाग व ट्रांस–यमुना मैदान में स्थित जनपदों में बालिकाओं की संख्या में प्रभावी वृद्धि देखनें को मिलती है। पूर्वी उत्तर–प्रदेश में इन जनपदों की स्थिति तराई क्षेत्र व गंगा नदी के सहारे फैले जनपदों में देखने में आती है। तराई जनपद सिद्धार्थनगर में 4401 बालिकाएँ (63.14 प्रतिशत) इस दशक में जुड़ गई हैं, जो सबसे अधिक वृद्धि है। जबकि ठीक इसके विपरीत पठारी जनपदों रूहेलखण्ड, व अवध का मैदान के अधिकांश जनपदों में गत दशक में इनकी संख्या में कमी हुई है। पूर्वी जिलों में इनकी संख्या में अत्यन्त गिरावट देखने में आती है। कानपुर नगर में 33,647 बालिकाओं की संख्या कम हो गई है। यह कमी 20.76 प्रतिशत है। गोरखपुर, महाराजगंज, श्रावस्ती, बलिया, जौनपुर, गाजीपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में इसी वर्ग के जिले हैं। पठारी भूभाग पर ललितपुर, हमीरपुर, महोबा, बाँदा, मिर्जापुर, सोनभद्र में भी इनकी संख्या घटी है। सम्पूर्ण रूप से 44 जनपदों में इनकी संख्या में कमी 8.32 प्रतिशत है, इनमें शामिल प्रत्येक जनपद ने 2654 नगरीय बालिकाओं की औसत रूप में कमी अंकित की है। इनकी संख्या में वृद्धि अंकित करने वाले प्रत्येक जनपद ने औसत रूप से 5668 नगरीय बालिकाओं की वृद्धि की हैं। यह वृद्धि दर 13.62 प्रतिशत है।

नगरीय बालिकाओं के अनुपात में परिवर्तन का तुलनात्मक प्रारूप (2001–2011): प्रस्तुत शोध पत्र के इस भाग में यह देखने का प्रयास किया गया है कि गत दशक में प्रदेश के विभिन्न जनपदों में बालिकाओं के अनुपात में कहाँ तक वृद्धि या कमी हुई है। वर्ष 2001 की तुलना में 2011 में यह अनुपात कम हुआ है, तो उसको ऋणात्मक श्रेणी में व यदि अधिक हो गया है, तो उसको धनात्मक श्रेणी में रखा गया है। अनुपात की कमी अंकित करने वाले जनपदों की संख्या सबसे अधिक 44 है व मात्र केवल 27 जनपदों ने इस दशक में अनुपात में वृद्धि अंकित की है।

2001–2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं के अनुपात में कमी अंकित वाले जनपदः गत दशक 2001–2011 में सबसे अधिक कमी आगरा में 66 व सबसे कम मथुरा में 2 की मिलती है। यह दोनों जनपद एक दूसरे के समीप स्थित हैं। इन दोनों जनपदों के समीप स्थित बुलन्दशहर में इनके अनुपात में 53 की कमी आई है। प्रदेश का दक्षिणी व मध्य भाग के जनपदों में यह अनुपात घटा है। निम्न सारिणी में प्रति जनपद औसत कमी 17.6 बलिकाओं की हुई है।

उपरोक्त सारिणी से स्पश्ट है कि प्रदेश के 23 जनपदों में यह कमी 5 से 15 के मध्य मिलती है। यह कुल कमी 188 की देखनें में आती है। औसत रूप से प्रति जनपद 8 की दर से अनुपात में कमी हुई है। 16 से 30 कमी कमी 15 जनपदों में अंकित की गई है। इनमें 327 की कुल कमी की दृष्टि से प्रति जनपद 22 के अनुपात की कमी आई है। इसके साथ ही छः जनपदों मुजफ्फरनगर, मैनपुरी, गोंडा, मेरठ बुलन्दशहर, व आगरा ने 44 बालिकाओं की अपने अनुपात में अत्यधिक कमी अंकित की है। उपरोक्त मध्य गंगा–यमुना दोआब, गंगा घाघरा नदियों के बीच के भूभाग में इन जनपदों का बसाव प्रमुख रूप से मिलता है।

सारिणी 4: 2001 से 2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं के अनुपात में कमी व वृद्धि अंकित करने वाले जनपद

क्रम सं०	अनुपात में संख्यात्मक अन्तर	वृद्धि वाले जनपद	अनुपात की कुल वृद्धि	कमी वाले जनपद	अनुपात की कुल कमी	जनपदों की संख्या
1	ढ 5	5	9	6	24	11
2	6.10	6	44	13	110	19
3	11.15	5	62	4	54	9
4	16.20	4	71	6	104	10
5	21.25	4	90	5	115	9
6	26.30	2	55	4	108	6
7	31.35	1	33	3	98	4
8	36 झ	ग	ग	3	163	3
योग		27	364	44	776	71

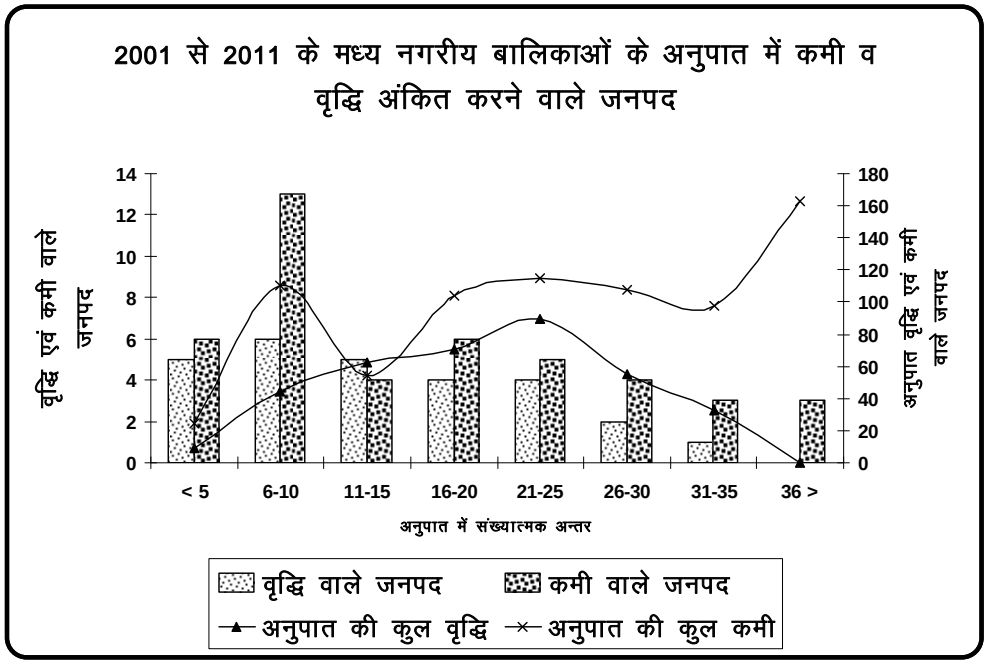

2001 से 2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं के अनुपात में वृद्धि अंकित करने वाले जनपदः 2001 से 2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं के अनुपात में जिन जनपदों ने वृद्धि अंकित की है, ऐसे जनपदों की संख्या 27 है। इनमें प्रति जनपद औसत रूप से अनुपात 13.5 बालिकाओं का बढ़ा है। सबसे कम एक ही वृद्धि सहारनपुर व फिरोजाबाद में तथा सबसे अधिक 33 की वृद्धि फैजाबाद, जनपद में देखनें को मिलती है। प्रदेश के 16 जनपदों ने 1 से 15 के बीच अपने अनुपात में वृद्धि अंकित की है। इसका विस्तार रूहेलखण्ड व निम्न गंगा–यमुना दोआब में मिलता है। 16 से 30 तक की वृद्धि रखने वाले जनपदों की संख्या 10 है, जिनकी समूह के रूप में उपस्थिति पठारी भूभाग पर मिलती है।

निश्कर्शः– उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रदेश स्तर पर वर्ष 2001 से 2011 के मध्य नगरीय बालिकाओं के अनुपात में 3.41 की कमी आई है। वर्ष 2001 में जहाँ बालिकाओं का औसत अनुपात 15.66 था वही वर्ष 2011 में घटकर 12.25 रह गया। यद्यपि इनकी जनसंख्या में प्रदेश स्तर पर 36238 की वृद्धि हुई, परन्तु इनके औसत अनुपात में कमी अंकित की गई है। 2001–2011 के मध्य केवल 27 जनपद ही ऐसे पाये गये, जिनमें बालिकाओं की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई, जो औसतन 5668 बालिका प्रति जनपद थी। दूसरी और शेश 44 जनपदों में प्रति जनपद 2654 बालिकाओं की कमी दर्ज की गई है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदेश में नगरीय बालिकाओं के अनुपात पर मुख्य रूप से जिन कारकों ने अधिक प्रभाव डाला है उनमें अर्थव्यवस्था का प्रकार, नगरीय व ग्रामीण जनसंख्या, धार्मिक विचारधारा, साक्षरता का स्तर, जिलों का जनसंख्या आकार एवं उनकी स्थिति नगरों का जनसंख्या आकार

और उनकी स्थिति क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति रोजगार की प्राप्ति के साधन इत्यादि प्रमुख रहे है। सबसे बड़ी बात जो अधिक प्रभावी है, इसमें सामाजिक विचारधारा, रीति रिवाज, परिवार के आकार के प्रति लोगों की सोच में परिवर्तन है।

संदर्भ

1. बंसल, एस0सी0, उत्तर प्रदेश का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ– 2014–15
2. बंसल, एस0सी0, जनसंख्या भूगोल, आर0के0 बुक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2015
3. मौर्य, एस0डी0 जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2013
4. चांदना, आर0सी0, जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली–2007
5. त्रिपाठी, के0एन0, उत्तर प्रदेश का समग्र अध्ययन, बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016–17
6. पंकज कुमार एवं रेनू सिंह, उत्तर प्रदेश में बालक एवं बालिकाओं (0–6 आयुवर्ग) की जनसंख्या व उसके अनुपात में परिवर्तन (2001–2011), रूहेलखण्ड शौध पत्रिका Vol. XX, जुलाई 2016
7. भारत की जनगणना : 2001–2011
8. उत्तर प्रदेश की जनगणना : 2001–2011